

जिससे पानी हाथ में लगाकर चाक पर चढ़े हुए मिट्टी के लोंदे को चिकना करते हैं।

**चकवा** पुं. (तद्.) जाड़े में नदियों और बड़े जलाशयों के किनारे दिखाई देने वाला एक पक्षी "चक", इसे सुरखाब भी कहते हैं, यह दक्षिण को छोड़कर सारे भारत में पाया जाता है, यह प्रायः झुंड में रहता है, यह हंस की जाति का पक्षी अधिक गर्मी पड़ने पर भारत से चला जाता है, ऐसी प्रसिद्धि है कि रात्रि में इसके नर और मादा अलग-अलग रहते हैं, प्रातःकाल मिलते हैं, शाम को फिर अलग-अलग हो जाते हैं पु. (देश.) 1. एक बहुत ऊँचा पेड़ जो मध्य प्रदेश, दक्षिण भारत तथा चटगाँव की ओर बहुतायत में मिलता है 2. हाथ से बनाई हुई आटे की लोई 3. जुलाहों की चरखी तथा बटाई में लगी हुई बाँस की छड़ी।

**चकवी** स्त्री. (तद्.) मादा चकवा।

**चकवृद्धि** स्त्री. (तत्.) मूलधन पर व्याज-गणना का एक प्रकार जिसमें उत्तरोत्तर व्याज पर व्याज लगता/बढ़ता रहता है तथा संचयी क्रम से भी व्याज मूल में सूद-दर-सूद जुड़ता रहता है।

**चका** पुं. (तद्.) 1. पहिया, चक्का 2. चाक वि. चकित, स्तंभित।

**चकाचक** वि. (तत्.) 1. तर, सरोवर 2. खूब, भरपूर (अनु.) भरपेट, अघाकर, अति प्रीतिकर।

**चकाचौंध** स्त्री. (देश.) दे. चकाचौंध।

**चकाचौंध** स्त्री. (देश.) यकायक अत्यंत तेज प्रकाश के कारण दृष्टि का उधर न ठहर पाना, प्रकाश के कारण आँख का तिलमिला उठना।

**चकाना** अ.क्रि. (देश.) हैरान होना, आश्चर्य से ठिठक जाना।

**चकाबू** पुं. (तद्.) प्राचीन काल में युद्ध के समय किसी व्यक्ति या व्यवस्था की रक्षा के लिए उसके चारों ओर कई मंडलाकार पंक्तियों में सैनिकों की तैनाती, चक्रव्यूह।

**चकार** पुं. (तत्.) 1. वर्णमाला में छठा व्यंजन वर्ण 2. दुख या सहानुभूति सूचक शब्द।

**चकित** वि. (तत्.) चकपकाया हुआ, विस्मित, आश्चर्ययुक्त, दंग 2. भ्रान्त।

**चकिता** स्त्री. (तत्.) 1. चकपकाई हुई, विस्मिता, भ्रान्ता 2. एक वर्णवृत्त।

**चकुलिया** स्त्री. (तद्.) एक प्रकार का पौधा या झाड़ी।

**चकृत** वि. दे. चकित।

**चकेठ** पुं. (तद्.) बाँस या लकड़ी का एक नोकदार डंडा जिससे कुम्हार अपना चाक घुमाते हैं, कुलाल डंडा।

**चकोट** पुं. (देश.) 1. गाड़ी के पहिए से जमीन पर बनने वाली लीक या लकीर 2. चिकोटी, नौचना।

**चकोतरा** पुं. (देश.) नींबू की प्रजाति का एक बड़ा फल जो खाने में खट्टा-मीठा होता है और शीत ऋतु में मिलता है, जंबीरी, नींबू, बड़े नींबू का एक प्रकार, सुगंधा, धुकर्कटी, मातुलंग।

**चकोता** पुं. (देश.) एक ऐसा चर्म रोग जिसमें घुटने के नीचे छोटी-छोटी फुंसियाँ उभरती हैं और बढ़ती चली जाती हैं।

**चकोर** पुं. (तत्.) 1. तीतर की जाति का बड़ा पहाड़ी पक्षी जो नेपाल, उत्तराखंड, पंजाब एवं अफगानिस्तान के पहाड़ी क्षेत्रों में पाया जाता है, यह चंद्रमा को देखकर प्रसन्न होता है, विषैले भोजन को देखकर इसकी आँखें लाल हो जाती हैं 2. एक वर्णवृत्त जो सवैया के प्रकार का होता है।

**चकोरी** स्त्री. (तत्.) मादा चकोर।

**चकोहा** पुं. (तद्.) 1. प्रवाह में घूमता हुआ पानी 2. भँवर।

**चकौटा** पुं. (देश.) 1. एक प्रकार का लगान जो प्रति बीघे धनराशि के हिसाब से नहीं लिया जाता 2. वह पशु जो ऋण के बदले दिया जाए, इसे 'मुलवन' भी कहा जाता है।

**चक्क** पुं. (तद्.) चकवा (चक्रवाक) 2. कुम्हार का चाक 3. प्रांत, दिशा वि. भरपेट (भोजन), तृप्ति देने वाला, तृप्त।